उपसंहार

उपसंहार

मनुष्य एक राजनीतिक प्राणि होने के नाते मनुष्य की दैनंदिन जीवन में विभिन्न राजनीतिक आयामों की व्याप्ति दिन-प्रतिदिन बढती जा रही है। विज्ञान, धर्म, नीति, उद्योग, परिवार, समाज और राष्ट्र की तथा विश्व के संबंधों में भी राजनीति अपनी जडें जमा रही है। परिणामस्वरुप साहित्य की अभिव्यक्ति मे राजनीतिक चेतना प्रभावी रुप में विकसित होती जा रही है। साहित्य के विविध विधाओं में उपन्यास विधा सर्वाधिक लोकप्रिय बनती जा रही है। उपन्यास के माध्यम से मानवी चेतना को गतिशील बनाने का काम आज बडी मात्रा में होता जा रहा है। मानवीय चेतना आज की स्थिति में राजनीतिक चेतना के साथ जुडी हुई है। आज उपन्यास जनतांत्रिक साहित्य विधा के रुप में समाज के सन्निकट अपना स्थान रखता है। युग जीवन का यथार्थ समग्रता के साथ उपन्यास में प्रतिबिंबित हो उठता है। आज का उपन्यास साहित्य कोरा सामाजिक साहित्य न रहकर इसमें राजनीतिक के अनेक से आयामों को जाने अनजाने में विस्तार मिल जाता है। स्पष्ट है कि आज के अधिकांश उपन्यासों में सामाजिकता के साथ-साथ राजनीति गहराई के साथ संप्रक्त हो चुकी है। हिंदी उपन्यासों के क्षेत्र में 'प्रेमचंद' जी के युग से राजनीति का प्रवेश हो चुका है। प्रेमचंदोत्तर युग में और साठोत्तरी कालखंड में हिंदी उपन्यासों में राजनीति एक प्रमुख विधा के रुप में प्रकट हो रही है। जिस तरह धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव उपन्यास साहित्य पर पडता है, उसी प्रकार राजनीति का भी प्रभाव उपन्यास साहित्य पर पडे बगैर नहीं रह पाता। राजनीतिक बदलावों की स्थितियों की दखल उपन्यास साहित्यमें जरुर ली

जाती है। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में हमारे भारत देश की राजनीति तथा विश्व की राजनीति में काफी परिवर्तन लक्षित होते हैं। दल बदलाव की स्थितियाँ, परायें आक्रमण, आपात्कालिन स्थिति, कांग्रेस की पराजय और जनता पार्टी का सत्तारुढ होना फिर जनता पार्टी में दरारें पड जाना। तत्पश्चात् कांग्रेस का फिर सत्तारुढ होना आदि अनेक घटनाएँ भारतीय राजनीति में काफी परिवर्तन कर सकी है। इन घटनाओं से भारतीय राजनीति में कई मोड भी आये हैं। दल-बदलावों की कुटील नीतियाँ, भ्रष्टाचारों की गंदी नालियाँ, देश की बुनियाद को खोखला बना रही हैं। सत्तापिपासा विपक्षियों की गंदी हरकतें आदि के कारण भारतीय जनतंत्र की दृट बुनियाद में दुल-मुल स्थिति का निर्माण हुआ। भारतीय राजनीति में चढाव-उतार, उत्थान-पतन महसूस होने लगे। भारतीय राजनीति के परिवर्तित मोडों को हिंदी उपन्यासकारों ने वाणी देने का काम किया है।

आजादी के पश्चात स्वतंत्र भारत की राजनीतिक गतिविधियों का अंकन करने वाले अनेक राजनीतिक उपन्यास लिखे गये। 'कठपुतली', 'अमरबेल', 'धर्मपुत्र', 'मैला ऑचल', 'निशिकांत', 'ज्वालामुखी', 'उदयास्त', 'भूले-बिसरे चित्र', 'रुपाजीवा', 'प्रतिक्रिया', 'सागर संगम', 'एक और मुख्यमंत्री', 'रागदरबारी', 'महाभोज', 'दारुल शफा', 'समय एक शब्द भर नहीं है।', 'शांति भंग', 'प्रजाराम', 'सुराज्य', 'जंगलतंत्रम' आदि उपन्यास भारतीय राजनीति की विविध शक्लों को पाठको के सामने रखने के लिए बहुत सफल बन बैठे हैं। इन उपन्यासों में मन्नू भंडारी का 'महाभोज' अपना एक अनोखा महत्व पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है।

आज की शासन व्यवस्था और राजनीतिक माहौल को लेकर आज अनेक प्रकार के राजनीतिक उपन्यास लिखे जा रहे हैं। इन उपन्यासों में भारतीय

समाज की सामाजिक नीति, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्थिति और गति के विविध दृष्टिकोणों को पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया गया है। आज की राजनीतिक उपन्यासों का मूल उद्देश्य परिवर्तित मानवी मूल्यों की प्रतिष्ठापना करके विश्वबंधुत्व और वैश्विक मानवता का महत्व विशद करना है। आज के राजनीतिक उपन्यासों में सामाजिक जीवन प्रमुख रहा है। स्वतंत्रता पूर्व राजनीतिक उपन्यासों में जैसे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन प्रमुख विषय रहता था वैसे ही स्वतंत्रता के पश्चात ज्यों राजनीतिक उपन्यास लिखे गये इन उपन्यासों ने ग्रामिण राजनीति, पहाडी ऑचलो की राजनीति, शहरों की राजनीति, महानगरों की राजनीति, दलित-पीडित, सर्वहारा, खेतिहर मजदूर और मिल-मजदूरों की राजनीति, गॉधीवाद, मार्क्सवाद से जुडी हुई राजनीति आदि राजनीति के विविध आयाम देखने को मिलते हैं। ऐसे राजनीतिक उपन्यासों के साथ सामाजिक समस्याएँ गहराई से जुडी हुई हैं। खास तौर पर साठोत्तरी हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों में राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं का इतना गहरा संबंध जुडा हुआ है कि ऐसे संबंधों से स्वातंत्र्योत्तर मानव जीवन की व्याख्या सुस्पष्ट होती जा रही है।

साठोत्तरी कालखंड में राजनीतिक उपन्यासों में मार्क्सवाद, प्रगतिवाद, समाजवाद, गॉधीवाद, राष्ट्रवाद आदि अनेकसी संकल्पनाएँ सुस्पष्ट हो रही है। स्वतंत्र भारत के राजनीतिक उपन्यासों में प्रजातंत्र का खोखलापन सुस्पष्ट किया है। प्रजातंत्र में स्थिति संशय की स्थितियॉ, अनीतियॉ, रिश्वतखोरियॉ, काला-बाजार, भ्रष्टाचार की विविध शकले, सांप्रदायिकता और जातियता की विविध समस्याएँ, शोषण के विविध हथकण्डे आदि ने भारतीय राजनीति को खोखला और संदेहास्पद बनाया है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों से उपर्युक्त सभी

बातों का स्पष्ट पता चलता है।

आजादी के बाद जिन राजनीतिक उपन्यास का सृजन हुआ, उन राजनीतिक उपन्यासों में राजनीतिक शकलो की विविधता सुस्पष्ट होती जा रही है। इन उपन्यासों में स्वतंत्र भारत की बनती बिगडती राजनीति, पूंजीपति वर्ग का उत्थान, सर्वहारा वर्ग का पतन, नारी जीवन में शोषण की स्थितियॉं और बदलावों के माहौल, ग्रामिण और महानगरीय राजनीति की गंदी नालियॉं, आपात्कालिन स्थिति का यथार्थ चित्रण चुनावी राजनीति में व्याप्त षडयंत्र और हथकण्डे, परिवर्तित शासन व्यवस्था पर व्यंग, शोषित-दलित, पीडित वर्ग की उपेक्षा, वर्तमान सत्ता लोलुपता, नेताओं की स्वार्थांध राजनीति, युवापिढी व्दारा चलाया जानेवाला आंदोलन, युवा पिढी व्दारा प्रस्थापित आतंकवाद और नक्सली आंदोलन, देश के सभी भागों में व्याप्त गुंडागर्दी, धर्म के और मंदिर-मस्जिदों के नामपर चलाये गये भयावह आंदोलन; आदि राजनीति की भयंकर स्थितियों और गतियों का चित्रण स्वातंत्र्योत्तर हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों में आया है। इन राजनीतिक उपन्यासों में राजनीति और समाजनीति इतनी घुल-मिल गई है कि इन्हें राजनीतिक उपन्यास कहे या सामाजिक उपन्यास कहे ऐसा भ्रम पाठकों के मन में पड जाता है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में हमने हिंदी के राजनीतिक उपन्यास परंपरा में 'महाभोज' में चित्रित राजनीतिक आयामों को तलाशने का प्रयत्न किया है। 'महाभोज' मन्नू भंडारी का सन १९७९ में लिखा हुआ एक सशक्त राजनीतिक उपन्यास लगता है। इस उपन्यास की बुनियाद एक दलित और पीडित युवक बिसू की हत्या की समस्या से जुडी हुई है। अर्थात इस दलित हत्याकांड को अपना 'महाभोज' बनाने वाले राजनीतिक दो दलों पर मन्नू जी ने यहॉं कठोर व्यंग किया है।

'महाभोज' का आयोजन एकाध आनंदवायी घटना घटने के बाद किया जाता है, इसमें दो राजनीतिक पार्टियाँ अपने राजनीतिक स्वार्थ का उल्लू सीधा करने के लिए बिसू की हत्या को 'महाभोज' बनवाना चाहती है।

सरोहा चुनाव क्षेत्र के उपचुनाव, इसी उपचुनाव की पृष्ठभूमिपर दलित युवक बिसू की हत्या, इसी उपचुनाव को जीतने के लिए भूतपूर्व मुख्यमंत्री सुकुलबाबू और दा साहब में लगी हुई होड, चुनाव के दिनों लघु-उद्योग योजना का मतदाताओं को दिखाया गया आमिष, दलितों के प्रति सहानुभूति दर्शाने के लिए इस घरेलू उद्योग योजना हीरा व्दारा किया गया उद्घाटन; सुकुलबाबू व्दारा हीरा के प्रति दिखाई गई सहानुभूति; बिंदा को हथियाने के लिए दा साहब व्दारा किए गये प्रयत्न; बिसू की हत्या की तलाशी के लिए सुकुलबाबू व्दारा की गई जॉच-कमिशन की मॉग। डी.आय.जी.सिन्हा को पदोन्नति की लालच दिखाकर बिसू की हत्या को 'आत्महत्या' में परिवर्तित करने की दा साहब की नीति। लखनसिंह को उपचुनाव के लिए सरोहा चुनाव क्षेत्र से दिया गया उम्मीदवारी टिकट। दा साहब के खिलाफ नाराजगी व्यक्त करने के लिए त्रिलोचनसिंह व्दारा दा साहब का मंत्रिमंडल गिराने के लिए गये प्रयत्न; अप्पासाहब के रुप में पक्षश्रेष्ठी का त्रितोचन को मनाने के लिए आना; पांडे व्दारा दा साहब को दिन भर की घटित घटनाओं का लेखा-जोखा विशद करना। दा साहब की बगुल भगत प्रवृत्ति, गांधीवाद और भगवद्गीता का खुद को भक्त समझकर दा साहब व्दारा किये गये काले कारनामे; दलित, पीडित, सर्वहारा मजदूरों का जोरावरसिंह व्दारा किया गया शोषण, दलित बस्ती की आगजनी, एस.पी.सक्सेना पर आतंक जताकर बिसू की हत्या की तलाशी में लाये जानेवाले रोडे; बेगुनाह बिंदा पर बिसू की हत्या का इल्जाम लगाने की और उसे बंदी बनाने

की दा साहब की प्रवृत्ति, न्यायालय के न्याय के खिलाफ सुप्रिम में दावा दाखल करने के लिए सस्पेंड अफसर सक्सेना का दिल्ली जाना; बिसू और रुक्मा के बुरे संबंधों का संदर्भ जोडा जाना; त्रिलोचन को पक्ष से और मंत्रीपद से हटाना आदि अनेकानेक घटनाओं में मन्नूजी ने भारत की गंदी राजनीतिक संकल्पनाओं को स्पष्ट करने का प्रभावी प्रयत्न किया है।

मन्नूजीने इन घटनाओं व्दारा भारतीय राजनीतिपर भारतीय राजनीतिक हरकतोंपर, नेताओं की प्रवृत्तिपर, चुनावी राजनीतिपर कठोर व्यंग किया है। भारतीय राजनीतिज्ञों की चालबाजी, चुनावी हथकण्डे, उनकी स्वार्थांधता, दलित-पीडितों का शोषण आदि सभी का यथार्थ चित्रण करके हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों की परंपरा में 'महाभोज' का अपना एक अलग स्थान निर्धारित किया गया है। राजनीतिपर इतना कठोर व्यंग करनेवाला हिंदी उपन्यास साहित्य में शायद यह पहला ही राजनीतिक उपन्यास होगा। हिंदी नाटक साहित्य में ज्ञानदेव अग्निहोत्री का 'शुतुरमृग' की तुलना में मन्नूजी का 'महाभोज' उपन्यास क्षेत्र में राजनीति पर कठोर व्यंग करनेवाला पहला उपन्यास हो सकता है।

'महाभोज' के बारे में लगता है कि मन्नू भंडारी को यहाँ 'बेलहर्ष दलित हत्याकांड' के बाद दलित समस्यापर एक अच्छा खासा दलित उपन्यास लिखना था; परंतु इसमें राजनीति इतनी हावी हो गई है कि यह एक कोरा राजनीतिक उपन्यास बन बैठा है। इस उपन्यास में राजनीति और समाजनीति एक दूसरे से अत्यंतिक संपृक्त हो गई है।

साठोत्तरी कालखंड में राजनीतिक उपन्यासों में समाजनीति गहरी जुडी हुई लक्षित होती है; महाभोज इसका अच्छा उदाहरण हो कता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के राजनीतिक विचारधाराओं के अंतर्गत समाजवादी

विचारधारा, मार्क्सवादी विचारधारा, राजनीतिक चेतना, गांधीवादी विचारधारा, लोकतांत्रिक समाजवादी विचारधारा आदि कई विचारधाराओं का समावेश होता है। इन सभी विचारधाराओं में लोकतांत्रिक समाजवाद, सामाजिक संगठन, जनशक्ति में विश्वास, पूंजीवादी शोषण का विरोध, शोषित, दलित पीडितों के प्रति सहानुभूति, सामाजिक समता, राजनीतिक और आर्थिक स्वातंत्र्य, वर्ग-संघर्ष, वर्ग-विहीन समाज की अवधारणा वर्गीय भेदाभेद के कारण निर्मित चेतना, शोषण के विरुध्द क्रांति, श्रम की महत्ता का प्रतिपादन, नारी चेतना के परिवर्तित आयाम, ग्रामिण राजनीति में आंदोलनकारी प्रवृत्तियॉं, चुनावी राजनीति, दलितों की हत्या का और दलित बस्ती की आगजनी का लाभ उठाने की प्रवृत्ति, प्रचार और प्रसार के माध्यमों को हथिया लेने की राजनीतिक प्रवृत्ति। अपने आसन को स्थिर रखने के लिए नेताओं की गंदी हरकतें, राजनीतिक दलों की तोड-फोड आदि राजनीति के विविध आयाम 'महाभोज' में लक्षित होते हैं।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में हमने मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विविध पहलुओं को दिखाने का प्रयत्न किया है। मन्नूजी का व्यक्तित्व एक सृजनशील कथालेखिका के रुप में देखने को मिलता है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। मन्नू भंडारी ने अपने वैवाहिक जीवन में जातियता की दीवारों को तोडकर राष्ट्रीय एकात्मता को बढावा दिया है और जातिय भेदाभेद को मिटाने का प्रयत्न किया है। मन्नूजी के बचपन के संस्कार उसके साहित्य पर लक्षित होते हैं। कालेज शिक्षा के दौरान राष्ट्रीय आंदोलन में शरीक होकर मन्नुजी ने अपने व्यक्तित्व में स्थित राष्ट्रभक्ति को प्रस्तुत किया है। मन्नूजी बहुमुखी प्रतिभाशाली एक कथालेखिका लगती है। उनकी लेखनी ने कहानी, उपन्यास और

नाटक इन तीन विधाओं पर कमाल का अधिकार जताया है। उनके उपन्यास बालमनोवैज्ञानिकता को भी पेश करने में सक्षम बन बैठे हैं।

इस लघु-शोध-प्रबंध में हमने लोकतांत्रिक समाजवाद, मार्क्सवादी विचारधारा, राष्ट्रवादी चिंतनधारा और गांधीवादी चेतना आदि के साथ-साथ 'महाभोज' में इन राजनीतिक विचारधाराओं को तलाशने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में स्वातंत्र्योत्तर हिंदी की राजनीतिक उपन्यास परंपरा को दर्शाने के लिए १९५३ से सन १९८३ तक के कुछ उन्निस उपन्यासों का विश्लेषण कर के इन उपन्यासों में चित्रित राजनीति की विविध शकलों को दिखाने का प्रयत्न किया है।

'महाभोज' में चित्रित राजनीति को स्पष्ट करते समय हमने दलित और राजनीति, राजनीति और समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, जॉच-कमिशन और राजनीति, चुनाव घोषणा पत्र और राजनीति, दलित क्रांति और राजनीति, ईमानदार जनता प्रेमी नेताओं की कथा-व्यथा और राजनीतिक दलों की तोड-फोड और राजनीति, आज की न्यायव्यवस्था और राजनीति, सरकारी अफसर और राजनीति आदि राजनीति के विविध आयामों के साथ 'महाभोज' में तलाशने का प्रयत्न किया है।

संक्षिप्त में 'महाभोज' राजनीतिक उपन्यास परंपरा में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है; यह स्पष्ट होता है। आधुनिक जीवन में राजनीति सर्वत्र व्याप्त है। राष्ट्रीय स्वातंत्र्य एवं सामाजिक न्याय के लिए आज हर व्यक्ति राजनीतिक गतिविधियों पर अपना लक्ष केंद्रित कर रहा है। इस हालत में साहित्य के सभी आयामों में राजनीति की विभिन्न पर्तें स्पष्ट होती जा रही हैं। आज की राजनीति विभिन्न विचारधाराओं, विभिन्न दृष्टिकोण और विभिन्न मोडोंपर से करवटे लेती-लेती गुजर रही हैं। 'महाभोज' में इसके सही दर्शन होते हैं। 'महाभोज' में गांधीवादी

चेतना, दलित चेतना, साम्यवादी चेतना, मार्क्सवादी चेतना विविध पात्रों के माध्यम से उभर उठी हैं। बिंदा और रुक्मा मार्क्सवादी चेतना से संपन्न लगते हैं।

इस उपन्यास में दलित चेतना को राजनीतिक नेताओं व्दारा दबाने का काम भी किया है और प्रजातंत्र में समान अधिकारों की अवहेलना की गई है। मानवीय संबंधों में भेदाभेद की खाईयाँ निर्माण करके वर्ग-संघर्ष दिखाया है। इस उपन्यास में जनवादी चेतना के स्वर भी उभर उठे हैं। हत्याकांड, मार-काट, आगजनी आदि को दिखाकर आज की राजनीति में असुरक्षितता पर प्रकाश डाला है। मन्नूजी ने इस उपन्यास के माध्यम से आज की कुर्सी की राजनीति पर कटु व्यंग किया है। दा साहब और सुकुलबाबू इसके अच्छे उदाहरण हैं। इस उपन्यास में पुलिस माहौल की भ्रष्ट नीति स्पष्ट हो पाई है। अपनी पदोन्नति के लिए प्रयत्नबध्द डी.आय.जी.सिन्हा उसका अच्छा उदाहरण है। इन सारे आयामों से स्पष्ट होता है कि 'महाभोज' उपन्यास शुरु से अंत तक भारतीय राजनीति के विविध शकलों को प्रस्तुत करनेवाला एक दस्तावेज लगता है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की उपलब्धियाँ :-

१) भारतीय जनजीवन में राजनीति के विविध आयाम सर्वत्र फैल गये हैं।

२) इस आत्मकेंद्रित राजनीति के विरोध में युवकों में विद्रोह की भावना पनपने लगी है।

३) आज की राजनीति में दलितों के प्रति दिखाई गई सहानुभूति कृत्रिम लगती है।

४) आज पीडित दलितों में भी चेतना जागृति हो रही है; और उनमें विद्रोह की भावनाएँ पनप उठी है।

५) चुनावी राजनीति में अनेक गंदे हथकंडे अपनाये जा रहे हैं।

६) चुनाव के लिए अयोग्य उम्मीदवार को टिकट दिए जा रहे हैं।

७) राजनीतिक दलों में तोड-फोड की नीतियाँ प्रबल होती जा रही हैं।

८) चुनाव के दिनों मतदाताओं को आमिष दिखाए जा रहे हैं।

९) क्रांतिकारी समाचार-पत्रों को अपना पक्षधर बनाने की रीति में वृध्दि होने लगी है।

१०) सरकारी नेता आत्मकेंद्रित बनने के नाते राजनीति में घुसखोरी का और भ्रष्टाचार का दौर-दौरा शुरु है।

११) राजनीतिक नेताओं के आश्रय से अपनी पदवृध्दि के लिए अनेक सरकारी अफसर प्रयत्न बध्द हैं।

१२) दलित नारियों में भी चेतना जागृति हो रही है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की मौलिकता :-

१) मन्नूजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के आधारपर उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं और साहित्यिक विषयों की विविधताओं को चित्रित किया है।

२) राजनीतिक उपन्यास परंपरा में 'महाभोज' का अनन्य साधारण महत्व विशद किया है।

३) भारतीय राजनीति के षडयंत्र में दलितों की स्थिति और गति को चित्रांकित करने का प्रयत्न किया है।

४) भारतीय राजनीति की यथार्थता को प्रस्तुत किया है।

५) ईमानदार जनताप्रेमी नेताओं की कमियाँ आज महसूस होती है। इसपर भी यहाँ अभिप्राय प्रस्तुत किया है।

६) राजनीति के अमानवीय आयामों पर भी यहाँ प्रकाश डाला है।

७) दलित जनजीवन की कथा-व्यथा को प्रस्तुत किया है।

८) राजनीति के उपन्यासों की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला है।

९) आज की राजनीति में होनेवाले न्याय की अवहेलना का चित्रण किया है।

शोध की संभावनाएँ :

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में यह सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित विषयोंपर स्वतंत्र रुप से अध्ययन किया जा सकता है-

१) 'महाभोज' में चित्रित दलित चेतना।

२) 'महाभोज' में बिगडी हुई राजनीति।

३) 'महाभोज' में राजनीतिक शोषण

४) 'महाभोज' में राजनीतिक हथकंडे।

५) 'महाभोज' में राजनीतिक ताण-तणाव।